हिन्दी महाविद्यालय

संस्कृत विभागः

Hearty welcome
TO
THE NAAC
Committee members

दृष्टिः

- गुणवत्ता उन्मुखं शिक्षणं प्रदातुं यत् छात्राणां क्षमताम् बहिः आनेतुं शक्नोति।
- छात्राणां कृते स्वं व्यावसायिकरूपेण द्रष्टुं सहायतां कर्तुं, व्यावसायिके, शिक्षणे, प्रकाशने वा स्नातकोत्तरकार्ये मूल्यवान् कौशलं क्षमता च।
- छात्राणां कृते परिष्कृतलेखनस्य समीक्षात्मक चिन्तनस्य च कौशलं प्रदातुं यत् न केवलं शैक्षणिकक्षेत्रे अपितु व्यावसायिकवृद्धौ अपि उपयोगी भवति।
- छात्राणां सहायतां कर्तुं प्रत्येकं अवसरं उपयुज्य तादात्म्यस्य, मूल्यानां, शिष्टाचारस्य नैतिकतायाः च अन्वेषणार्थम्।
- भारतं 'विश्वगुरु' इति क्रमेण वैश्विकसन्दर्भे संस्कृतशिक्षणस्य वैशवस्य स्थापनायै केन्द्रियसंस्कृत विश्वविद्यालयस्य विश्वस्तरीयविश्वविद्यालयरूपेण परिवर्तनम्।

लक्ष्यम्

- संस्कृत-धरोहर-आधारित-नव-ज्ञानस्य मञ्चं निर्मातुं।
- सर्वेषु सम्बन्धितक्षेत्रेषु भारतीयज्ञानव्यवस्थां प्रवर्तयितुं।
- मुख्यधारायां शिक्षायां संस्कृतं माध्यमरूपेण आनेतुं।
- संस्कृतभ्रातृसङ्घं आधुनिकशिक्षणेन सह संयोजयितुं।
- संस्कृतं बहुविधसंशोधनक्षेत्रं जीवन्तं कर्तुं।
- संस्कृताधारितज्ञानकेंद्रत्वेन मान्यताप्राप्तरूपेण सीएसयू विकसितुं।
- वेदवेदङ्गस्य पारम्परिकव्याख्यायाः समकालीनचिंतन्य परिवर्तनस्य च विशेषसन्दर्भेण शास्त्राणां व्याख्यां कर्तुं।

उद्देश्यानि

- व्याकरणस्य उच्चारणस्य च क्षेत्रेषु भाषाकौशलस्य विकासः।
- साहित्ये विभिन्नविधा यथा कथा, अकथा, काव्य, जीवनी, आत्मकथा, लघुकथा, नाटक आदि।
- समीक्षात्मक-रचनात्मक-चिन्तनस्य माध्यमेन छात्रस्य समग्रविकासः।
- संस्कृतभाषायाः अन्येषां च शिक्षणशाखानां प्रचारार्थं निर्देशात्मकानि, अनुसन्धानं, विस्तारं च सुविधां प्रदातुं ज्ञानस्य प्रसारं, उन्नतिं च कर्तुं यत् यत् उचितं मन्यते।
- एकीकृतपाठ्यक्रमानाम् मानविकीसामाजिकविज्ञानं विज्ञानं च स्वस्य शैक्षिककार्यक्रमेषु विशेषप्रावधानं कर्तुं।
- शिक्षणप्रक्रियायाः अन्तरविषयाध्ययनस्य अनुसन्धानस्य च नवीनतानां प्रवर्धनार्थं समुचितं उपायं कर्तुं।
- संस्कृत- संस्कतपारम्परिकविषयेषु समग्रविकासाय, प्रचाराय, संरक्षणाय अनुसन्धानाय च जनशक्तिं शिक्षां प्रशिक्षयितु च ।

FACULTY PROFILE

S. No.	Name of the Faculty	Designation	Qualification	
01.	Dr. Muktavani Shastri	Associate Professor & Head of the Department Supervisor for O.U.	M.A., M.phil., Ph.D	
02.	Smt. G. Vimala	Assistant Professor	M.A	
03.	Miss. S. Nandini	Assistant Professor	M.A	

OTHERS ACTIVITIES 2017-18 TO 2021-22

S. No.	Date	Name of the Activity	Details of the Resource person
01.	2017	Member of Board of Studies (O.U.)	Dr. Muktavani Shastri Head of Dept. HMV College
02.	2017-18	Members of academic Council	Department of Sanskrit Hindi Mahavidyalaya
03.	2017-18	Resource person accessed Through Youtube	
04	2017-18	Examiner for P.hd viva-voice	O.U.
05.	2017-18	Observer in T.S. Public Service Commission	

OTHERS ACTIVITIES 2017-18 TO 2021-22

S. No.	Date	Name of the Activity	Details of the Resource person
06.	2017-18	Member of Bos Nizam college	Nizam College
07.	2017-18	Member of Syllabus Committee	Womens college O.U.
08.	2017-18	Member of Governing Council	Autonomy
09	2017	Author of Degree I and II Sanskrit Test books 'Saraswathi Sushma'	

DEPARTMENTAL ACTIVITIES PHOTOGRAPHS

हिंदी स्वतन्त्र वार्ता 20.7.2017

राष्ट्रीय संगोष्ठी का हुआ आयोजन

हैदराबाद, 19 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। हिन्दी महाविद्यालय, संस्कृत विभाग द्वारा एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। प्राचार्य ज्योति हस्तक ने महाविद्यालय का परिचय देते हुए स्वागत भाषण दिया।

अध्यक्ष सुरेंद्र लूणिया ने सभी विद्यार्थियों को संस्कृत अध्ययन के साथ-साथ राष्ट्र भक्त बनने की प्रेरणा दी। मंत्री लक्ष्मीनिवास शर्मा ने प्राध्यापकों से संस्कृत, संस्कृति एवं राष्ट्रप्रेम को विकसित करने का अनुरोध करते हुए, संस्कृत साहित्य के महत्व को रेखांकित किया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में उस्मानिया विश्वविद्यालय के प्रो. नीलकंठम् ने वेदों से लेकर आधुनिक संस्कृत साहित्य में उल्लिखित राष्ट्र भक्ति पर प्रकाश डाला।

राष्ट्रभक्तों का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि शिवाजी चरित, प्रताप विजय, विवेकानंद, दयानंद, भगतसिंह आदि सभी का चरित्र संस्कृत में उपलब्ध है। अध्यक्षीय भाषण देते हुए प्रो. रामुलू ने कहा कि संस्कृत भाषा और राष्ट्रभक्ति का अनिवार्य संबंध है। हमें अपनी भाषा और राष्ट्र पर गर्व होना चाहिए। वेद का उद्धरण देते हुए आपने कहा कि यह भारत देश हमारी माता और हम सब इसके पुत्र हैं।

आंध्र विश्वविद्यालय के प्रो. येडुकोण्डलु ने लोकमान्य बालगंगाधर तिलक के जीवन चरित्र को आधार बनाकर राष्ट्रभक्ति का यथार्थ चित्रण करते हुए छत्रपति शिवाजी महाराज की शौर्यगाथा पर बड़े रोचक ढंग से प्रकाश डाला। जिनका अध्ययन कर विद्यार्थी राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत हो सकते हैं। संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. मुक्ता वाणी ने संगोष्ठी का संयोजन तथा विषय प्रवर्तन प्रस्तुत किया। उद्घाटन सत्र में सभी के प्रति आभार ज्ञापन हिंदी विभागध्यक्ष डॉ. रजनी धारी ने किया तथा हिंदी महाविद्यालय समिति के द्वारा अतिथियों का सम्मान किया गया।

द्वितीय सत्र में डॉ. रमा देवी, डॉ. विद्यानंद आर्य, डॉ. अनुपमा, डॉ. अनुसूया प्रसन्न लक्ष्मी, डॉ.ए. वरलक्ष्मी, डॉ. राजनारायण अवस्थी, डॉ. जोशी संतोष, श्रीमती मैत्रेयी शास्त्री, श्रीमती पद्माजलि, श्रीमती गीता, श्रीमती नंदिनी, रामनारायण, डॉ. रजनी धारी ने प्रपत्र प्रस्तुत किये।

हिन्दी मिलाप 21.7.2017

हिन्दी महाविद्यालय में राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित

हैदराबाद, 20 जुलाई-(मिलाप ब्यूरो) हल्लाकुंटा स्थित हिन्दी महाविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

दीप प्रज्वलन के पश्चात रत्ना कॉलेज की प्राध्यापिका मैत्रेयी शास्त्री ने वेद पाठ किया। महाविद्यालय का परिचय देते हुए प्राचार्या ज्योति हस्तक ने उपस्थिजनों का स्वागत किया और संस्कृत भाषा के महत्व को प्रतिपादित करने के लिए संस्कृत विभाग को बधाई दी। अध्यक्ष सुरेन्द्र लूणिया ने विद्यार्थियों को संस्कृत अध्ययन के साथ-साथ राष्ट्र भक्त बनने की प्रेरणा दी। मंत्री लक्ष्मीनिवास शर्मा ने प्राध्यापकों से संस्कृत, संस्कृति और राष्ट्र प्रेम को विकसित करने का आह्वान करते हुए संस्कृत साहित्य के महत्व को रेखांकित किया। मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित उस्मानिया विश्वविद्यालय के प्रो. नीलकंठम ने वेदों से लेकर आधुनिक संस्कृत साहित्य में उल्लेखित राष्ट्र भक्ति का समय नक्शा खींचा। वेद मंत्र एवं संस्कृत के श्लोकों का प्रमाण प्रस्तुत करते हुए उन्होंने राष्ट्र प्रेम के महत्व पर बल दिया। उन्होंने कहा कि शिवाजी चरित, प्रताप विजय, विवेकानंद, दयानंद, भगत सिंह आदि का चरित्र संस्कृत में उपलब्ध हैं। अध्यक्षीय भाषण देते हुए प्रो. रामुलू ने कहा कि संस्कृत भाषा और राष्ट्र भक्ति का प्रगाढ़ संबंध हैं। हमें अपनी भाषा और राष्ट्र पर गर्व होना चाहिए।

आंध्र विश्वविद्यालय के प्रो. येडुकोंडलू ने लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के चरित्र को आधार बनाकर राष्ट्र भक्ति का यथार्थ चित्रण किया। उन्होंने छत्रपति शिवाजी महाराज की शौर्य गाथा पर अत्यंत रोचक ढंग से प्रकाश डाला। संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. मुक्ता वाणी ने विषय प्रवर्तन प्रस्तुत किया। उद्घाटन सत्र में हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. रजनी धारी ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। हिन्दी महाविद्यालय समिति की ओर से अतिथियों का सम्मान किया गया। द्वितीय सत्र में रामचंद्रा डिग्री कॉलेज की प्राचार्य डॉ. रमादेवी, उस्मानिया विश्वविद्यालय के डॉ. विद्यानंद आर्य, हैदराबाद विश्वविद्यालय की डॉ. अनुपमा, वरंगल की डॉ. अनुसूया प्रसन्न लक्ष्मी, संस्कृत अकादमी की डॉ. ए. वरलक्ष्मी, ईसीआईएल गौरव के संपादक डॉ. राजनारायण अवस्थी, संस्कृत अकादमी के जोशी संतोष, रत्ना कॉलेज की मैत्रेयी शास्त्री, सिंगरेणी कॉलेज की पद्मांजलि, नंदिनी वुमेन्स कॉलेज, बेगमपेट की गीता, रामनारायण वैज्ञानिक, हिन्दी महाविद्यालय की डॉ. रजनी धारी प्रपत्र प्रस्तुत किए। प्रपत्र वाचकों को प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित करने के पश्चात डॉ. उपेन्द्र शास्त्री ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

हिन्दी मिलाप 14.9.2017

हिन्दी के भविष्य को सुनहरा बनाने में करें सहयोग

हिन्दी भाषा विश्व व्याप्त है। आधुनिक युग में विश्व की अनेक उच्चस्तरीय शिक्षण संस्थाओं में हिन्दी का अध्ययन एवं अध्यापन हो रहा है। आज भी समस्त भारत में अनेक महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में नानाविध विषयों का पठन-पाठन हिन्दी माध्यम से कराया जा रहा है। दक्षिण भारत की मातृभाषाएँ- तेलुगु, कन्नड़, मलयालम और तमिल हैं, पुनरपि ऐसे अनेक विद्यालय और महाविद्यालय हैं जहाँ हिन्दी माध्यम में शिक्षा दी जा रही है। जैसा कि कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी ने कहा था- 'विद्या की कोई भी संस्था वास्तविक अर्थ में भारतीय नहीं कही जा सकती, जब तक उसमें हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन का प्रबंध नहीं हो।'

हिन्दी सेवा समितियों द्वारा चलाये जा रहे शिक्षण संस्थानों का भविष्य उज्ज्वल है, उनमें रोजगार के भी आसार हैं। आवश्यकता इस बात की है कि हम हिन्दी भाषा को अच्छे ढंग से पूरी तन्मयता से सीखें। इसके व्याकरण, शैली एवं सुगठित वाक्य-संरचना का पूर्ण अभ्यास करें। इसमें आधे-अधूरे न रहें, क्योंकि एक अच्छा भाषाविद् ही सफल अनुवादक, हिन्दी अधिकारी, श्रेष्ठ प्राध्यापक, सुयश प्रोफेसर, उच्च शिक्षक तथा हिन्दी पंडित आदि पदों के साथ न्याय कर सकता है। जैसे चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य ने कहा था- 'भारत के सभी भागों में सारी शिक्षा का एक उद्देश्य हिन्दी का पूर्ण ज्ञान भी होना चाहिए।'

आज हिन्दी क्षेत्र से संबंधित सरकारी संस्थाओं में अनेक पद हैं। जहाँ सुयोग्य व्यक्तियों की आवश्यकता है, साथ ही उम्र की सीमा है। अत: युवावस्था में ही हमें भाषा की गहराई को समझना होगा। वाणिज्य, बैंक, फिल्म, दूरदर्शन, आकाशवाणी, रेलवे, लोकसभा, राज्यसभा, विधानसभा, पत्रकारिता, संपादन, हिन्दी डी.टी.पी. और प्रूफ रीडिंग आदि ऐसे बहुव्यापक क्षेत्र हैं, जहाँ बृहत् रोजगार हैं। सम्प्रति केंद्र सरकार भी हिन्दी में कार्य करने हेतु प्रोत्साहित कर रही है, जिससे हमें लाभान्वित होना चाहिए।

इस प्रकार हिन्दी का भविष्य अति उज्ज्वल है तथा हिन्दी में भी कॅरियर बनाया जा सकता है किंतु यह एक कटु सत्य है कि भविष्य में शिक्षण संस्थानों के अंतर्गत समस्त पाठ्य-सामग्री हिन्दी माध्यम में मिलना संभव नहीं है। हाँ, के.जी. से पी.जी. तक हिन्दी विषय को अनिवार्य रूप से पढ़ाया जा सकता है, जिससे हिन्दी सीखने की उत्सुकता में उत्तरोत्तर वृद्धि होगी। अब वो दिन दूर नहीं जब स्पोकन इंग्लिश संस्थाओं का स्थान, स्पोकन हिन्दी ले लेगा। आज भी 'ईनाडु' आदि समाचार पत्रों में स्पोकन हिन्दी कक्षाओं का विज्ञापन प्रकाशित हो रहा है। अत: आइये, हम सब हिन्दी के भविष्य को सुनहरा (स्वर्णिम) बनाने में अपना योगदान दें।

जय हिन्दी, जय नागरी

– डॉ. मुक्ता वाणी
असोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
संस्कृत विभाग,
हिन्दी महाविद्यालय

हिन्दी मिलाप 11.11.2017

हिन्दी महाविद्यालय में हुआ अतिथि व्याख्यान

दराबाद, 10 नवंबर-(मिलाप ब्यूरो) न्दी महाविद्यालय के संस्कृत विभाग रा अतिथि व्याख्यान का आयोजन या गया।

आज यहाँ जारी प्रेस विज्ञप्ति के नुसार, संस्कृत शोध संस्थान, हैदराबाद श्वविद्यालय में कार्यरत डॉ. अनुपमा ने डिग्री द्वितीय वर्ष के नवीन पाठ्यक्रम पर प्रकाश डाला। अभिज्ञान शाकुंतल, कादम्बरी, केनोपनिषद् से संग्रहित पाठों पर विचार व्यक्त करते हुए सेमिस्टर परीक्षाओं में किस प्रकार प्रश्नों का उत्तर दिया जाए? उन्होंने इसकी भी जानकारी दी। साथ ही कवि कालीदास, बाणभट्ट के काव्यों पर समीक्षा प्रस्तुत की। अवसर पर प्राचार्य पी. गिरिधर ने कहा कि आज नासा में संस्कृत ग्रंथों पर विशेष रूप से शोध कार्य हो रहा है, जो गर्व का विषय है। उन्होंने मुख्य वक्ता का शॉल व श्रीफल द्वारा सम्मान किया। डिग्री प्रथम वर्ष की छात्रा ने अतिथि व्याख्याता का पुष्पमाला से स्वागत किया। डिग्री द्वितीय वर्ष के छात्र नितिश ने प्रशस्ति-पत्र भेंट किया। इससे पूर्व बी.ए. द्वितीय वर्ष की छात्रा नंदिनी ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। संस्कृत विभाग की अध्यक्ष डॉ. मुक्तावाणी ने अतिथि डॉ. अनुपमा का परिचय दिया। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

डॉ. अनुपमा ने अनुशासन के महत्व पर दिया व्याख्यान

हैदराबाद, 10 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। हिन्दी महाविद्यालय, संस्कृत विभाग द्वारा अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। संस्कृत शोध संस्थान हैदराबाद विश्वविद्यालय में कार्यरत डॉ. अनुपमा ने डिग्री द्वितीय वर्ष के नवीन पाठ्यक्रम पर प्रकाश डाला। अभिज्ञान शाकुंतल, कादम्बरी, तैत्तिरीयोपनिषद् एवं केनोपनिषद् से संगृहीत पाठों पर विचार व्यक्त करते हुए सेमिस्टर परीक्षाओं में किस प्रकार प्रश्नों का उत्तर दिया जाय, इसकी विस्तृत जानकारी दी। कवि कालिदास, बाणभट्ट के काव्यों पर समीक्षा प्रस्तुत की। उपनिषदों के अनुसार शिष्य और अनुशासन के महत्व को प्रतिपादित किया।इस अवसर पर प्राचार्य पी. गिरिधर ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि आज नासा में संस्कृत ग्रंथों पर विशेष रूप से शोध कार्य हो रहा है, यह गर्व का विषय है। छात्रा चेतना व छात्र नीतीश ने अतिथि व्याख्याता का स्वागत किया। बी.बी.ए. छात्रा नंदिनी ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की तथा डॉ. मुक्तावाणी अध्यक्ष संस्कृत विभाग ने अतिथि डॉ. अनुपमा का परिचय एवं धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

डॉ. अनुपमा का स्वागत करते हुए एचएमवी के प्रीन्सिपल पी. गिरिधर।

SEMINAR/WORKSHOPS/CONFERENCE/ WEBINARS ATTENDED BY THE FACULTY OF OUR DEPARTMENT

S. No.	Place and Date	Seminars/ Workshops/ Webinars attended by the Faculty	Name of the sponsoring agency
01.	HMV 2018	3 months course for spoken sanskrit and grammar	Hindi Mahavidyalaya
02.	21st -25th march, 2017	Workshop on " Reasearch methodology"	Hindi Mahavidyalaya

03.	Date 14 & 15 Dec-2018	International Paper Presentation on 'Kavyo Me Manaveeya Mulay'	Badruka College
04.	14 Sep 2017	National Paper Presentation Translation in Hindi	Hindi Mahavidyalaya
05.	3 & 4 March 2017	National Paper Presentation on 'Womens Issues and Challenges'	Nizam College
06.	27 & 28 Feb. 2017	National Seminar on 'Ashtadasha vidyas'	Sanskrit Academy

Research Papers by Faculty

Research papers	ISSN / ISBN	Year	
Pramukha kavya	978-81-905891-5-5	2018	
Shubhechna	97881905-891-3-5		
Swathanthratha andolan	978-81-905703-3-2		

विश्लेषण

बलानि

- विभागस्य सर्वाधिकं बलं आत्मीयशिक्षकछात्रसम्बंधे अस्ति यत् विभागं जीवितं करोति।
- शिक्षणस्य शिक्षणपर्यावरणम्।

निर्बलता

- विभागस्य अधिकं सशक्तं प्रवीणं च कर्तुं पीएचडी धारकाणां आवश्यकता वर्तते।
- शोधपृष्ठभूमियुक्तानां पर्याप्तशिक्षकाणां अभावः संस्कृते स्नातकोत्तरपाठ्यक्रमस्य आरमभस्य मार्गे महती बाधक : अस्ति।
- अन्तरविषयापाठ्यक्रमस्य आरम्भस्य आवश्यकता वर्तते।
- पर्याप्तसङ्ख्यायाः संकायस्य आवश्यकता अस्ति।

आव्हानानि

- विज्ञान-प्रौद्योगिक्याः भाषा-साहित्य-युगे संस्कृतस्य महत्वं प्रासंगिकतां च निर्वाहयितुम्।
- पारम्परिकज्ञानात् एकः भागः, संस्कृतभाषायां कृतैः आधुनिकसंशोधनैः छात्रान् समृद्धिकर्तुं अत्यावश्यकम्।
- गुणात्मक शैक्षिक पृष्ठभूमि के छात्र शक्ति में सुधार।
- छात्रान् सर्वकारीय-गैर-सरकारी-स्वरोजगारक्षेत्रेषु अवगतं कृत्वा ये संस्कृतस्य छात्राणां कृते स्वभविष्यस्य निर्माणाय महत् अवसरं प्रदास्यन्ति।

INNOVATIVE PRACTICES

- Teaching through Power Point Presentation
- Guest lectures
- Assignments
- Seminars from students
- Group Discussions

संस्कृतविभागस्य भविष्यस्य योजना:

- संकायस्य छात्राणां च भाषयां शोधकार्य कर्तुं प्रोत्साहयन्
- संस्कृतभाषाशिक्षण-अध्ययनयो: चोदनक्षेत्राणां ज्ञानं साझां कर्तुं देशस्य प्रसिद्धसंस्थानां विशेषज्ञान् आमन्त्रयन् ।
- संस्कृतभाषाया: प्रसारविषये राष्ट्रियगोष्ठीनां आयोजनं, तस्या: महत्वं च ।

THANK YOU